

**SHRI K. C. PANT:** I fully agree with the hon. Member that meticulous care should be taken. But if a pointed question is asked as to the arrears of a particular firm, I do not think the Government can withhold the information from Parliament.

**SHRI BHUPESH GUPTA:** Certainly, income-tax arrears are not private secrets, they should be known especially when public interest demands it. The point is also there that if they give any wrong answer it creates all kinds of complications and later, subsequent corrections do not remedy the situation. That is why I wanted to say something—you did not allow—with regard to the Asia Foundation question. They have corrected it. Those who are in possession of the documents should have quoted letters showing that the money came without Government itself sanctioning. The result was when that lady was in Ceylon—I have seen Ceylonese papers—she was described as a CIA spy—an Indian citizen was described as a CIA spy—because of the reply given. I do not know to what extent the recent statement is going to rectify the damage done. Suppose she is not a spy then a great damage has been done by the statement he made, to a scale which I do not understand. Therefore, he should be extremely careful in making replies, especially when they may have repercussions. You have made one of the Indian citizens as a spy. If she is a spy, she should be treated as such. But if she is not, then also a very serious damage has been done. Another point is, it will have the same impact . . .

**SHRI K. C. PANT:** I am happy that he has got some soft corner for these companies.

**SHRI BHUPESH GUPTA:** What is the soft corner? No soft corner.

**MR. CHAIRMAN:** It is all right.

**SHRI BHUPESH GUPTA:** I cannot allow it. He says, soft corner. But he is a company man like a director. I have not seen a share. I say, this reply should be corrected.

श्रीमती सरला भदौरिया : श्रीमन्, आपने मुझे से कहा था कि आपको इजाजत देगे ।

**MR. CHAIRMAN:** I have already told you that I will not allow you to mention that thing. I allowed you last time to mention it many times. Please sit down.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : आप इसके बाद इनको इजाजत दे दें ।

**MR. CHAIRMAN:** I told her last time to mention the matter. She mentioned it. Now, when she came to my room, I told her that no more mention should be made about it. There it ends.

श्री राजनारायण : जब सारी चीजें हो जायं, तब बाद में इनको मौका में दीजिये ।

#### CALLING ATTENTION TO MATTERS OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

I. 'RESHAM ROAD' LINKING GILGIT IN PAKISTAN OCCUPIED KASHMIR WITH SINKIANG IN CHINA

श्री सुंदर सिंह भंडारी (राजस्थान) : श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से पाक-अधिकृत काश्मीर में गिलगित को चीन में सिकियांग से मिलाने वाली "रेशम रोड" के निर्माण की ओर प्रधान मंत्री का ध्यान दिलाना चाहता हूँ ।

**THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI B. R. BHAGAT):** Mr. Chairman, Sir, the House is aware that China and Pakistan have been

[Shri B. R. Bhagat]

building roads to link up Pakistan-occupied Kashmir with China. The link is through the 15,000 ft. Mintaka Pass on the Sinkiang-Kashmir border. The Chinese have now completed their portion of the road north of the pass and trucks can use it during the summer months. On the Kashmir side, a fair weather jeepable road exists between Gilgit and Pasu, a distance of about 70 miles. The Pakistanis are improving this road as well as building a new jeepable road from Pasu onwards to the Mintaka Pass, a distance of another 70 miles.

On October 21, 1967, China and Pakistan signed an agreement on the opening of the Sinkiang-Gilgit link. The text of the agreement has not been published. The official Press releases issued by the two Governments announcing the agreement stated that the road provides for the reopening of the ancient overland route and would facilitate trade in the border areas as well as between China and Pakistan. According to Press reports in the Pakistan Press, the road was due to be opened this month.

There are two aspects of this agreement on the opening of the Sinkiang-Gilgit road to which I would like to invite the attention of the House. First, it seeks to interfere with Indian sovereignty in Kashmir. Pakistan and China have no common border, the two countries being separated by the portion of Jammu and Kashmir which is in Pakistan's illegal occupation. Thus, agreements signed by Pakistan with China concerning Pakistan-occupied Kashmir are illegal, invalid and totally unacceptable to us. We have naturally lodged our strong protests both with the Government of China as well as Pakistan. I place on the Table of the House protest notes delivered to them against this agreement.

The second aspect of this agreement to which I should like to invite the attention of the House is that an agreement which purports to relate to flow of commerce should be kept secret. Obviously the purpose is not as innocent as it is made out to be.

The Agreement is in the line with the collusive Sino-Pak postures directed against India. I need hardly add that Government are fully aware of the threat to our security posed by this road and everything possible has been done to safeguard our defence and security.

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : श्रीमन्, इस प्रश्न के सम्बन्ध में कुछ बातें उपस्थित होती हैं। मंत्री महोदय ने माना है कि 15 हजार फीट ऊँचों दर्रे से यह सड़क आती है। मैं यह जानना चाहूँगा कि इसके बाद भी मंत्री महोदय का यह कहना कि यह सड़क केवल समर के महीनों में काम में आती है और वर्ष भर काम में नहीं आयेगी इसका क्या आधार है। (Interruption)

15 हजार फीट ऊँचाई की सड़कें इस घाटी में हैं और साल भर तक काम में आ सकती हैं, आती रही हैं, ऐसी स्थिति में क्या आपको निश्चित मालूम है कि यह सड़क वर्ष भर काम में नहीं आयेगी।

दूसरे, जब पिछले अक्टूबर के महीने में दोनों देशों की विज्ञप्ति से इस बात का समाचार आपको मिला कि इस तरह की सड़क गिलगित को जोड़ने वाली बनाई जा रही है, तो आपने यह विरोधपत्र या इस सम्बन्ध में इन दोनों सरकारों से किया जाने वाला विरोध, जिसकी आपने कहा कि टेबिल आफ द हाउस पर आप कापी रख रहे हैं, यह कब किया और इस सम्बन्ध में इन दोनों सरकारों की तरफ से आपको कोई जवाब मिला या नहीं।

तीसरे, क्या आपने इस बात की जानकारी की है कि यह सड़क, सड़क के आसपास पड़ने वाली किसी भी आबादी को नहीं जोड़ती है

और यह सड़क केवल गिलगित को जोड़ने के लिये केवलमात्र सामरिक महत्व की दृष्टि से बनाई गई है और इसका व्यापार की दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। सामरिक दृष्टि से बनाई गई सड़क जो पाक अधिकृत काश्मीर के भाग में पाकिस्तान और चीन को जोड़ने के लिये बनाई जा रही है, आपने इस सम्बन्ध में क्या कदम उठाये।

चीन ने तो 1963 में जब काश्मीर के साथ अपनी सीमा के निर्धारण की बात कही थी, तो उस समय उसका स्टैंड था कि जो आज स्थिति है उसको देखते हुए केवल उसने सीमा निर्धारण करने की कोशिश की थी, काश्मीर और चीन के बीच में। लेकिन यह सड़क निकालते समय चीन की तरफ से जो वक्तव्य आया है, उसमें गिलगित को पाकिस्तान का हिस्सा मान कर चीन और पाकिस्तान ने आपस में समझौता करने का प्रयत्न किया है। चीन के इस बदले हुये रवैया के प्रति, जिसमें उसने अब गिलगित को स्पष्ट रूप से पाकिस्तानी इलाका स्वीकार किया है आपकी तरफ से क्या कदम उठाये जा रहे हैं।

श्री बी० आर० भगत : जहां तक चीन के बदले हुये रवैया का सवाल है यह तो बात साफ है कि चीन और पाकिस्तान का जो गठबन्धन है वह भारत के खिलाफ है और यह पहले हम कह चुके हैं। इसलिये यह भी कारण है कि चीन का रवैया इस मामले के ऊपर बदला है।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : आप 1963 के और आज के स्टैंड में कुछ बदल अनुभव करते हैं या नहीं।

श्री बी० आर० भगत : जहाँ तक लिखित बातों का सवाल है, 1963 में जिन शब्दों का वह प्रयोग करता था वह शब्द आज बदल गये हैं और माननीय सदस्य ने जो कहा वह ठीक है। हमने शुरू में भी कहा कि यह कहना कि यह बिलकूल व्यापार के लिये सड़क बनाई गई है, यह बात साफ नहीं है। मान-

नीय सदस्य ने जो उदाहरण दिया है उससे ऐसा लगा कि यह सड़क ऐसे पास से जाती है जहाँ आबादी कम है। हमने अपने बयान में साफ कर दिया है कि इससे हमारी सुरक्षा को खतरा है, इससे हम आगाह हैं और जो कुछ भी हम उचित प्रबन्ध कर सकते हैं इस खतरे से बचने का, वह सब इन्तजाम हम कर रहे हैं।

इसके बाद उन्होंने प्रोटेस्ट नोट की बात कही। यह बात सही है कि अक्टूबर में इसकी चर्चा हुई कि दोनों के बीच में कोई समझौता हुआ है मगर चूंकि यह समझौता प्रकाशित नहीं हुआ था, हम इसकी खोज में थे कि समझौते की कापी मिले, देखें उसको कि किस तरह का समझौता है। कुछ दिनों के बाद पता चला कि यह समझौता प्रकाशित नहीं होगा, सीक्रेट रखा गया है, तब हमने अपना प्रोटेस्ट नोट उनके पास 19 अप्रैल को भेजा है। चूंकि यह सड़क खुलने वाली है, कहा जाता है कि इस महीने के अन्त में या जून में खुलेगी, इसलिये हमने अभी उनको प्रोटेस्ट नोट भेजा है।

जहां तक सड़क की बात है कि यह गर्मियों में सिर्फ चलेगी, हमारे पास जो सूचना है वह यह है कि यह सड़क, जो मिनटाका पास, सिकियांग से पास होगी, इस पर ट्रकें गर्मी के महीनों में ही चल सकती हैं। मगर माननीय सदस्य का यह कहना कि यह साल भर चालू रहेगी, इस आशंका को भी हमें ध्यान में रखना चाहिये और मैं उनसे सहमत हूँ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : श्रीमन्, मैं एक और प्रश्न आपकी आज्ञा से पूछना चाहता हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि पाक-अधिकृत क्षेत्र में पाकिस्तान के द्वारा इस सड़क का बनाया जाना, इस सम्बन्ध में हमने क्या दृष्टिकोण बनाया है; क्योंकि पिछले दिनों में जब मंगला बांध की बात हुई थी

[श्री सुन्दर सिंह भंडारी]

कब जवाब देते समय यह कहा गया था कि जबराने की कोई बात नहीं, अगर इसकी बजह से पाकिस्तान उस भूमि को किसी तरह से डेवलप करता है तो जिस दिन सारा पाक-अधिकृत काश्मीर हमारे पास आयेगा उसी दिन मंगला बाध भी हमारे पास आ जायेगा और हमने मंगला बाध की सफल समाप्ति पर पाकिस्तान को बधाई भी दी थी। मेरा यह कहना है कि अब यह एक नया डेवलपमेंट का काम पाकिस्तान ने इस क्षेत्र के अन्दर करने का फैसला किया है, 19 अप्रैल को अगर उनकी तरफ से तब तक जो भारी समझौता हुआ था, उसका पता लग गया होता और हमको सरकार ने बता दिया होता, तो बधाई देने का प्रमाण चूंकि उपस्थित नहीं हुआ, इस लिये 8 महीने बाद एक प्रोटैस्ट नोट भेजने की नौबत हमारे सामने उपस्थित हुई। पाकिस्तान का जो यह रवैया है कि आज हम अपने इलाके में फरक्का बाध बना रहे हैं उस पर भी हमको वह तन करता है और बार-बार उसके सम्बन्ध में स्पष्टीकरण लेता है और हम उसके सम्बन्ध में जिन बात करने को तैयार हैं, लेकिन हमारे इलाके में हमसे बिना पूछे, बिना सलाह के वह सड़क बनाता है और दुश्मन के आक्रमण की शक्ति में वृद्धि करता है तब भी हम उसके सम्बन्ध में कोई कदम उठाने के लिये तैयार नहीं हैं, तो क्या मैं यह आशा करूँ कि चूंकि पाकिस्तान ने एक गलत काम हमसे बिना पूछे इस क्षेत्र में किया है पाकिस्तान के साथ फरक्का बाध के सम्बन्ध में होने वाली बातचीत को समाप्त किया जायगा और इसके विरोध स्वरूप कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जायगा ?

श्री बी० आर० भगत : जहाँ तक इस सड़क के बनाने की बात है, हमने इस बयान में भी कहा है, पहले भी कहा है।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : आज ही कहा है।

श्री जे० पी० यादव : (बिहार) पहले कब कहा ?

श्री बी० आर० भगत : आप सुनेंगे नहीं तो पता कैसे चलेगा कि जवाब क्या है।

श्री जे० पी० यादव : जवाब है क्या ?

श्री बी० आर० भगत : आप सुनने की कोशिश करिए।

जो हिस्सा पाकिस्तान के अधिकार में है वह नाजायज है वह काश्मीर का हिस्सा है और पाकिस्तान ने जबरदस्ती और नाजायज ढंग से उस पर अधिकार कर रखा है। इसलिये उन्होंने जो सड़क बनाई है तथा जो चीन से समझौता किया है, उम्मा हम विरोध करते हैं, उसको नहीं मानते हैं।

जहाँ तक इसका मुलजाने का सवाल है उसके दो ही रास्ते हैं या तो ना तो सवाल बातचीत करके, शान्तिमय तरीके से मुलजाना जाय या झगड़ा करके मुलजाएँ। अभी तो हमको भरौसा है कि पाकिस्तान से बातचीत करके मुलहनामा हो सकता है और हमें करना चाहिये। दूसरा रास्ता तभी आ सकता है जब ये सब रास्ते बन्द हो जायें।

श्री जे० पी० यादव : श्रीमान

MR. CHAIRMAN: Mr. Yadav, you belong to which party?

SHRI J. P. YADAV: Jan Sangh.

MR. CHAIRMAN: Your leader has already put a series of questions . . .

श्री राजनारायण श्रीमान, इसमें लीडर और सदस्य की क्या बात है।

MR. CHAIRMAN: You can leave it to me.

श्री जे० पी० यादव : श्रीमान, मंत्री जी सही जवाब नहीं दे रहे हैं। यह देश की सार्वभौमता का सवाल है इसलिये जो ठीक

MR. CHAIRMAN: Don't tell me what I have to do. You can leave it to me. You can leave it to me as to how I should conduct the business of this House. Please do not suggest. I have some experience. (Interruption) Please sit down.

MR. CHAIRMAN Please sit down.  
Mr Murahari.

रीक करने के लिये संस्कार क्या करने  
चाह्य है ?

जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि हम क्या कर रहे हैं, हमारी सुरक्षा जो जो खतरा उत्पन्न हो गया है, उससे मावधान रहने और मुकाबला करने की हम भव नैयागी कर रहे हैं।

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश)  
श्रीमन्, मंत्री जी ने जो उत्तर दिया है, मैं चाहूँगा  
आप उसको ध्यान से सुनें ।

श्री जे० पी० यादव श्रीमन्, आपकी व्यवस्था के मुताबिक मैं खुदा आहूँ। आपन पुत्र था कि किस सन्धा के हो, उस हिमाज से भी मेरी बागी आती है।

श्री राजन, रायण आग ही बात, मैं  
बाद में करूँगा ।

श्री जे० पी० यादव हम आपस बात  
नहीं कर रहे हैं ।

MR. CHAIRMAN: Mr. Rajnarain rose before you and I noted down his name; therefore, there is no question of your demanding that I should call you first. I shall try to see that the opinion of the whole House is before the Government. I would like all sections of the House to have their say, especially the various parties. And regarding Members also, I shall decide who should be called first and who should be called last. Please sit down. Mr. Yadav, Mr. Niranjan Varma

[Mr. Chairman]

belongs to Jan Sangh. You belong to Jan Sangh. Supposing I call every Jan Sangh Member and do not call others, that would not be proper. Therefore, in this matter you better leave it to me. Trust me to discharge my duties in a proper manner. I will be most impartial to everyone. I am trying to see that every party is able to represent its views. Therefore, do not go too far and insist "I must speak, I must speak." Please don't dictate to me. Yes, Mr. Rajnarain.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, हमारी आपसे कर बद्ध प्रार्थना है कि सम्मानित सदस्य को आप जरूर मौका दें, उनके पास काफी मैटर है। श्रीमन्, हमारा छोटा सा सवाल है। माननीय मंत्री जी ने कहा कि 21 अक्टूबर को गत वर्ष समझौता हुआ, मगर उसका ब्यौरा नहीं आया, इसलिये भारत की सरकार ने कुछ लिखा नहीं। 181 दिन बीत गये, 181 दिन बीतने के बाद इस सरकार के दिमाग में यह बात आई कि सरकार को कुछ लिखना चाहिये जबकि वहां सड़क बन गई। मैं जानना चाहता हूं कि जब 21 अक्टूबर के समझौते की चर्चा अखबारों में आई तो सरकार की खुफिया, बांडर सिवियोरिटी फोर्स रही होगी और जब वहां सड़क बननी शुरू हुई, समझौते की डीटेल न भी आई, लेकिन जब समझौते के तदनुकूल काम शुरू हो गया, तो भारत की सरकार ने उस काम को, जिसे वह बिलकुल इल्लीगल, गलत समझती थी उसको रोकने के लिये क्या तदबीर की? यह मेरा सिम्पल प्रश्न है।

श्री बी० आर० भगत : उन्होंने कहा कि 181 दिन बीत गये और पता नहीं लगा। मैंने बताया कि हमने कोशिश की। मामूली समझौता होता तो पता लग सकता था। इसको प्रकाशित नहीं किया गया, इसको गुप्त रखा गया। जो चीज गुप्त रखी गई हो उसका बताना मुश्किल है।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, पाइन्ट आफ़ आर्डर।

श्री बी० आर० भगत : सुन लीजिये।

श्री राजनारायण : पाइन्ट आफ़ आर्डर है। मैं चाहूंगा कि सरकार हमारे सवाल के जवाब में रिगमरोल न करे। हमने सवाल किया है कि समझौता प्रकाशित न हुआ हो मगर जब समझौते का काम सशरीर, साक्षात् होने लगा, तो जब समझौते का काम होने लगा, जो गैर-कानूनी काम था, तो सरकार ने उसको रोकने की क्या कोशिश की?

श्री बी० आर० भगत : जो चीज अपने इलाके में बना रहा है, सिक्किम में उसे रोकने का सवाल नहीं है। जहां तक पकिस्तान बना रहा है काश्मीर के उस हिस्से में जिसको उसने नाजायज कब्जे में रखा हुआ है, उसके बारे में हमने शुरू से कहा है कि हम विरोध करते हैं। पहले भी सवाल उठा था सदन में उस समय जवाब दिया गया था और हमारी ओर से कहा गया था कि उस प्रकार का काम पकिस्तान कर रहा है, यह बिलकुल हमारी सुरक्षा का खतरा है, ये सारी बातें पहले भी बताई गई थीं।

जहां तक रोकने का सवाल है, पाकिस्तान यह नाजायज ढंग से कर रहा है, यह हमने सब जगह बताया है। कोई सामरिक कार्यवाही करके रोका जाय, उसके अलावा दूसरा रास्ता नहीं है।

MR. CHAIRMAN: Mr. Yadav. Now, you have no right to demand that you must be allowed to put questions about this matter. But I am now asking you, independently of your views in the matter, to ask for clarifications as briefly as possible.

श्री जे० पी० यादव : श्रीमन् कोई भी चीज बिना आपकी अनुमति से बोलने की बात नहीं होगी, लेकिन आपसे अनुमति के लिये कहने का अधिकार हमें रहेगा।

MR. CHAIRMAN: No, no, I do not say that. Your name is not here. Mr. Bhandari's name alone is here and I

am trying to give as much opportunity as possible. Therefore, do not be angry if I do not call you. (Inter-ruption) You can consult your leader in this matter because you are new; he will know better.

श्री जे० पी० यादव : मैं सरकार से जानना चाहता हूँ कि सरकार और पाकिस्तान के बीच जब काश्मीर सम्बन्धी बातें उठती हैं तो सरकार के पास 370 दफा का क्या जवाब है जिसमें काश्मीर को आपका पूर्णतः अंग नहीं कहा जा सकता क्योंकि एक अंग कहने के लिए एक संविधान, एक निशान और एक प्रधान की आवश्यकता होती है लेकिन काश्मीर के सम्बन्ध में ऐसा नहीं है। अभी भी आप राष्ट्रपति को काश्मीर में जमीन नहीं देने दी जा सकती, ऐसी स्थिति नहीं है कि आप उसे अपना कह सकें। दूसरी बात यह है कि अगर सरकार को यह गलत भ्रम भी ही जाता है कि कोई दुश्मन देश अपने देश में ऐसी सड़क बनाता हो जो हमारे देश पर आक्रमण करने का रास्ता बन सकती है तो हमारा काम है कि उसके मुताबिक कदम उठायें। मैं जानना चाहता हूँ कि सरकार के पास प्रोटेस्ट, स्ट्रांग प्रोटेस्ट और एम्फेटिक प्रोटेस्ट के अलावा कौन सा ऐसा जरिया है जिससे वह पाकिस्तान को समझा सके ?

श्री अर्जुन अरोड़ा (उत्तर प्रदेश) : आप बताइए ।

श्री जे० पी० यादव : हम बता देंगे, हम बता भी रहे हैं। हमने उस काश्मीर को बचाने के लिए जनसंघ के संस्थापक का बलिदान दिया है जिससे शेव अब्दुल्ला एक्सपोज हुआ। उसे बचाने के लिये हम लड़ रहे हैं और काश्मीर को हम किसी कीमत पर छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। प्रेसिडेंट को जमीन लेने की दिक्कत हुई तो आप एक सेन्ट्रल एक्ट इन्ट्रोड्यूस करने जा रहे हैं लेकिन 370 दफा खत्म कर आप काश्मीर अपना नहीं कह सके हैं। तीसरी

बात जो मैं पूछना चाहता हूँ वह यह है कि गिलगित तो दुनिया का सब से बड़ा सामरिक स्थल है, तो उस गिलगित का फैसला करने के लिये या जो आकूपाइड काश्मीर पाकिस्तान के कब्जे में है उसको लेने के लिए क्या और कौन सा प्रयास आपने किया है और आगे करने वाले हैं सिवाय लिखा-पढ़ी के, इसको छोड़कर और कुछ क्या करने वाले हैं।

श्री बी० आर० भगत : जहाँ तक काश्मीर का और हमारा आन्तरिक संबंध है जिसके लिये संविधान की धारा का उन्होंने उदाहरण दिया वह तो एक अलग बात है और उस पर एक अलग बहस हो सकती है। जहाँ तक इसका सवाल है कि हमने क्या किया गिलगित को लेने का या उस सब को करने का जो कि उन्होंने कहा तो यह तो मैंने बताया कि तरीके दो होते हैं, एक शांतिमय तरीका कि बात करके हल करना, दुनिया का एक फोरम है और अपने मित्र देश हैं उन सब में एक तरह से इसको सुलझाना, जिसको हम कर रहे हैं और दूसरा तरीका होता है फोर्स का, शक्ति का तरीका, तो माननीय सदस्य अगर यह चाहते हैं कि चूंकि कुछ नहीं हो रहा है तो शक्ति का प्रयोग किया जाय, वह तो अलग बात है, उसको हम अभी जायज नहीं समझते, मगर उसके अलावा और जितनी बातें हम कर रहे हैं वह बताया . . .

श्री जे० पी० यादव : बता कर रहे हैं, नोट भेजते हैं।

श्री बी० आर० भगत : हमने यह बिल्कुल घोषणा कर दी कि काश्मीर हमारा एक अंग है, पाकिस्तान ने इसका नाजायज कब्जा किया है, हर तरह से, हर उपाय से यह हमको वापस आना चाहिये।

श्री जे० पी० यादव : यह प्रथा छोड़िये, यह क्या बात है।

श्री निरंजन वर्मा (मध्य प्रदेश) : श्रीमान  
बहु बताने का कष्ट करें ...

شری سید حسین (جموں اور  
کشمیر) : چہر میں صاحب - میں ایک  
سوال پوچھنا چاہتا ہوں - آپ مجھے  
اس کے لئے موقعہ دیں -

[श्री संयद हुनेन (जम्मू और काश्मीर) :  
जेयरमैन साहब, मैं एक सवाल पूछना चाहता  
हूँ । आप मुझे इसके लिए मौका दें ।]

MR. CHAIRMAN: I will give you  
an opportunity after him. He stood  
up long before you got up.

श्री निरंजन वर्मा : श्रीमान को क्या यह  
मालूम है कि गिलगित प्रान्त बहुत पहले से  
ही समर-भूमि रहा है, अंग्रेजों के समय में जब  
गिलगित था तब उस समय वहां पर पांच  
राष्ट्रों की सीमा मिलती थी और इसके  
बाद जो द्वितीय युद्ध हुआ उसमें भी उस  
स्थान पर अधिक लक्ष्य दिया और संसार में  
छोटे छोटे राष्ट्र नहीं बल्कि सबल राष्ट्र भी  
मुटबन्दी करते हैं, जैसे कि नाटो, सिएटो आदि  
में हैं, और अभी आपने यह उत्तर दिया कि  
रूस को हमने यह जानकारी दे दी है, तो क्या  
बहु सम्भव नहीं है कि जब चीन में और रूस में  
सिकियांग के ऊपर और दूसरे मामलों के  
ऊपर कुछ कलह है और अफ्रीदियों के  
मामले में और इसी तरह से पख्तूनों के मामले  
में पाकिस्तान और अफगानिस्तान में आपस  
में कुछ संघर्ष है, तो अफगानिस्तान और  
रूस के साथ बैठकर इस मामले पर विचार  
करें और अगर श्रीमान का ऐसा विचार है  
कि ऐसा हो सकता है तो इस दिशा में आपने  
कोई कार्यवाही की या नहीं की ।

श्री बी० आर० भगत : अब यह तो  
सवाल है कि अफगानिस्तान से पख्तूनिस्तान  
के आश्रय पर मिल कर कोई रास्ता निकालें,  
बहु तो इस सवाल का समय नहीं है ।

श्री निरंजन वर्मा : यह मेरा मतलब  
नहीं है ।

श्री बी० आर० भगत : आपने सवाल  
तो यही किया है ।

شری سید حسین : چہر میں  
صاحب - میں آپ کی وساطت سے  
جاننا چاہتا ہوں کہ سرکار یہ بتائے کہ  
جب حال می میں لندن رپورٹر نے  
یہ خبر دی تھی کہ چوری چھپے  
کوئی ایک سڑھی ہو رہی ہے کوریاز  
کو بھیج دینے کی اور جب کہ کل می  
دہ تائمز آف انڈیا ۲۲ میں پھر خبر آئی  
ہے کہ ساؤزی تلگ کے تیار کردہ  
ٹیمپلٹ وہاں آئے ہیں ادھر سے لوت  
آئے ہیں جو کہ اکوپائٹ تلگ کشمیر  
میں اسٹوڈنٹس کو تربیت کرینگے اور  
وہاں وہ کوریاز حملہ کی تیاری کر رہے  
ہیں - یہ کل کے دہ تائمز آف انڈیا ۲۲  
میں خبر آئی ہے - تو میں جاننا  
چاہتا ہوں کہ شہنخ عبداللہ جب  
یہاں سے واپس گئے اور کشمیر ایر  
پورٹ میں انہوں نے کہا کہونکہ ان  
سے جب پوچھا گیا کہ اس میں کیا  
دراڑ ہے کہ اس طریقہ سے کوئی کوریاز  
تیاری کی جا رہی ہے - کیا ایسی  
کوئی چیز ہے جو کہ چوری چھپے کی  
جائے تو وہ بولے دنیا کو بتایا جائے -  
میں سمجھتا ہوں کہ شہنخ عبداللہ  
بلیف کرنا چاہتے ہیں اور ہم کو غافل  
بہن ہونا چاہتے - جب انہوں نے  
چوہلی دنگہ وہاں چو - این - لائی سے



مل کو حج کے بہانہ سے ساری سازشیں  
میں شرکت کر کے کام کیا جب کہ  
پاکستان نے پرانا حملہ کیا کشمیر پر  
ہندوستان پر تو پھر کیا آج ہماری  
سرکار ایمپیکیل کی پالیسی پر اور  
ایڈمز میٹ کی پالیسی چلائے گی یہ  
وہ ویجیلیٹ ہے کہ اور دوسرا اثبات  
ہمارے اندھا پر ہمارے کشمیر پر نہیں  
ہم - میں جاننا چاہتا ہوں کہ کیا  
سرکار اس قدر ویجیلیٹ ہے اور کیا  
پری کسٹری میژرس وہ لے رہی ہے ؟

†[**آئی سی یڈ ہسین** (جम्मू اور  
کاشمیر) : **چیرمین** صاحب، میں آپکی  
وصاات سے یہ جاننا چاہتا ہوں کہ سرکار  
یہ بتا دے کہ جب حال میں لندن رپورٹر  
نے یہ خبر دی تھی کہ چوری ٹیپے کوئی ایک  
سازش ہو رہی ہے، گوریلاز کو بھجنے  
کی، اور جبکہ کل ہی ٹائمز آف انڈیا  
میں یہ خبر آئی ہے کہ ماسکو سے تگ کے  
نہار-کردا ایجنٹ وہاں آئے ہیں، ان سے  
نہار آئے ہیں، جو کہ انکوائریڈ کاشمیر میں  
سٹوڈنٹس کو ٹرینڈ کریں گے، اور وہاں وہ گوریلا  
ہماری کی تیاری کر رہے ہیں—یہ کل کے  
ٹائمز آف انڈیا میں خبر آئی ہے—  
تو میں جاننا چاہتا ہوں کہ شے انڈوللا جب  
وہاں سے واپس گئے اور کاشمیر ایئر پورٹ  
میں انہوں نے کہا، کیونکہ ان سے جب پوچھا  
گیا کہ اس میں کیا راز ہے کہ اس طریقے  
میں کوئی گوریلا تیاری کی جا رہی ہے کیا  
ایسی کوئی چیز ہے جو کہ چوری ٹیپے کی  
جائے، تو وہ بولے، دنیا کو بتایا جائے۔  
میں سمجھتا ہوں کہ شے انڈوللا بلف کرنا  
چاہتے ہیں اور ہم کو گافیل نہی ہونا  
چاہیے۔ جب انہوں نے پہلی دفا وہاں  
چھ ان لائی سے مل کر ہج کے بھانے سے  
سازش میں شرکت کر کے کام کیا، جبکہ

†[ ] Hindi transliteration.

پاکستان نے پورا ہمارا کیا کاشمیر  
پر، ہندوستان پر، تو پھر کیا آج ہماری  
سرکار امپیکبل کی پالیسی اور امپیک-  
بل کی پالیسی چلا دے گی یا وہ وکیلٹ  
ہے کہ اور دوسرا ایک ہمارے انڈیا پر،  
کاشمیر پر، نہیں ہو۔ میں جاننا چاہتا  
ہوں کہ کیا سرکار وکیلٹ ہیں اور کیا  
سرکار پراکاشنری میجرمنٹ لے رہی ہے ]

**آئی سی۔ آر۔ بھگت** : یہ سارے سوال  
اس پر نہیں اٹتے لیکن جہاں تک امپیک-  
بل کی پالیسی کی بات ہے، کہ ہم امپیک-  
بل کی پالیسی چلا دے گی تو یہ بالکل  
غلط ہے اور وہ ہم نہیں چلا دے گی۔ جہاں  
تک یہ کہ شے انڈوللا کیا کر رہے ہیں  
اس سے آگاہ ہیں یا یہ کہ گوریلا کا کام  
وہاں شروع ہوا ہے تو اس سے، ان باتوں سے ہم  
بالکل آگاہ ہیں۔ ہم یہ ماننیہ  
سندھ کو بتا دینا چاہتے ہیں۔

**SHRI CHITTA BASU** (West Ben-  
gal): May I know from the hon.  
Minister whether he is in a position to  
inform this House as to whether there  
are any other instances of collusion  
between Pakistan and China which  
involves the use of the Pakistan-held  
Kashmir, because there was a discus-  
sion long time ago between Pakistan  
and China with regard to preparing  
certain plans involving the use of  
Pakistan-held territory of Kashmir to  
direct military offensives against  
India?

**SHRI B. R. BHAGAT**: There is no  
dearth of instances of collusion be-  
tween Pakistan and China. One exam-  
ple is the Border Agreement that  
Pakistan signed with China under  
which it gave away parts of Kashmir  
territory to China. This is another  
example. Then a large quan-  
tity of military armour has been  
given to Pakistan by China. These are  
some of the very glaring instances of  
their postures against India. Then  
you know what the Peking Radio is  
saying and what Pakistan is saying  
about this country. There are a  
number of instances which very